भारतीय दर्शन की विशेषताएँ

भारतीय दर्शन वैविध्यपूर्ण है। इसके विभिन्न संप्रदाय विभिन्न विचारधाराओं के समर्थक हैं। इनमें कुछ आस्तिक हैं, तो कुछ नास्तिक। फिर भी कुछ ऐसी सामान्य बातें अवश्य हैं, जिन पर सभी भारतीय दर्शन एवं सम्प्रदाय एकमत हैं। इन विभिन्नता एवं साम्यता होने के कारण कुछ बातों को भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताओं की संज्ञा दी जाती है। ये निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1). विचारों की स्वतंत्रता :→ भारतीय दर्शन की एक बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ बिना किसी दबाव के चिंतन हुआ है। इसीलिए यहाँ परस्पर विरोधी विचार भी साथ-साथ प्रस्तुत हुए हैं। विरोधी विचारों को भी भारतीय दार्शनिकों ने कभी बुरा नहीं समझा बल्कि अपना पक्ष प्रस्तुत करने के पूर्व वे विरोधियों द्वारा लगाये गये आरोपों को अपने सामने रखते थे और तब उनका खण्डन करते हुए आगे बढ़ते थे। शास्त्रार्थ की भी हमारे यहाँ स्वस्थ परम्परा थी। यह बात हमें पाश्चात्य दर्शन में नहीं दिखाई देती है। इससे वैचारिक स्वतंत्रता को तो बल मिला ही, और वैचारिक विविधता भी भारतीय दर्शन में आई।

(2). मोक्ष का महत्व :→ मोक्ष इस जीवन का चरम और अंतिम लक्ष्य होता है। इसलिए भारतीय दर्शन में केवल जिज्ञासा की तृप्ति के लिए दार्शनिक चिंतन नहीं करता। जीव, जगत, ईश्वर आदि की सत्ता पर विचार कर वह केवल इनके विषय में अपने अज्ञान को दूर करने के लिए नहीं करता, वस्तुतः इनके द्वारा वह जिस सत्य का साक्षात्कार करता है, उसे जीवन में उतारना भी चाहता है। दर्शन यद्यपि उसके लिए जीवन-दर्शन है, सत्य की प्राप्ति के साथ ही उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक भी होता है। भारतीय दर्शन न केवल इस जन्म में आने वाली मृत्यु से वरन् अगले जन्मों में होने वाली मृत्युओं से, और इस तरह से सम्पूर्ण जन्म-मरण के चक्र से ही मुक्ति

का आश्वासन देता है, इसे ही मोक्ष कहा गया है। वस्तुतः मोक्ष विषयक चिंतन ही समस्त भारतीय दर्शन की धुरी है और सारे भारतीय दर्शनों का लक्ष्य मुक्ति की प्राप्ति है, एकमात्र चार्वाक को छोड़कर।

(3) आत्मा के अस्तित्व में विश्वास :→ अधिकांश भारतीय दर्शन आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं जो शरीर से पृथक है, अजर-अमर है और मनुष्य का वास्तविक 'मैं' है। मानव अपने इस स्वरूप को जानकर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। इसके विपरित शरीर और मन को 'मैं' मानकर वह तरह-तरह से दुःख उठाता है। सच कहा जाये तो भारतीय दर्शन मनुष्य को उसके वास्तविक रूप से परिचित कराने का एक प्रयत्न है।

(4) भारतीय दर्शन आशावादी है :→ कुछ लोग भारतीय दर्शन पर निराशावाद का आरोप लगाते हैं। उनका कहना है कि यहाँ दर्शन जीवन के दुःखद पक्ष पर जरूरत से ज्यादा जोर देता है, अतः यह निराशावाद है। किन्तु यह आक्षेप गलत है। क्योंकि निराशावादी तो वे होते हैं जिन्हें आशा की कहीं कोई किरण दिखाई ही नहीं देता। जबकि भारतीय दार्शनिक जिस सत्य का साक्षात्कार करता है वह न केवल इस जन्म-जन्मांतर के दुःखों से मुक्ति का आश्वासन देता है बल्कि हमेशा के जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाता है। इससे अधिक आशावाद और क्या हो सकता है? इस प्रकार से भारतीय दार्शनिकों ने 'जीवन में सर्वत्र दुःख है' इस सत्य को बड़ी गहराई से महसूस किया और उसे स्वीकार कर इससे निवृत्ति की ओर चिंतन प्रारंभ किया और उसके कारण की खोज कर उसे पूर्णतः समाप्त करने का प्रयास किया।

(5) आनन्द को महत्व :→ भारतीय दर्शन 'मुक्ति' में न केवल सभी प्रकार के दुःख, भय, संदेह आदि से मुक्ति की बात करता है वरन् उस आनंद की प्राप्ति की भी आशा दिलाता है जो असीम है, अपरिमित है, नित्य है; जिसके सामने केवल सांसारिक दुःख नहीं सांसारिक सुख भी तुच्छ हो जाते हैं। उपनिषदों में इसे (ब्रह्म) आनंदस्वरूप कहा गया है। वही एकमात्र परम तत्व 'ब्रह्म' है।

(6). कर्मफल की प्राप्ति में विश्वास :→ भारतीय दार्शनिकों में कर्मफल एवं कर्मसिद्धांत को लेकर एकमत्ता दिखती है। कर्म सिद्धांत के अनुसार कर्म व्यक्ति का कर्तव्य है। उसे बिना फल की प्राप्ति के विरुद्ध भाव से अपने कर्तव्य (कर्म) को करते रहना चाहिए। "जो जैसा बोता है वैसा काटता है" यह अटल सत्य है। क्योंकि बबूल बोकर आम की आशा करना व्यर्थ है। भारतीय नीति में इसीलिए तीन प्रकार के कर्मों का उल्लेख मिलता है - 'प्रारब्ध कर्म', 'संचित कर्म' और 'संचियमान' या 'क्रियमाण कर्म'। चंद भौतिकवादी दार्शनिकों को छोड़कर सभी भारतीय दार्शनिक इसे स्वीकार करते हैं। उनका मत है कि यह सिद्धांत मनुष्य मात्र को आशा का सन्देश देता है।

(7) पुनर्जन्म में आस्था :→ भारतीय दर्शन का कर्मफल का सिद्धांत न केवल इस जीवन को, वरन मृत्यु के बाद के बाद जीवन को भी सँवारने का संदेश देता है क्योंकि कर्मफल मृत्यु के साथ ही समाप्त नहीं हो जाते। वे मृत्यु के बाद भी बने रहते हैं और अगले जन्म में जीव के सुख-दुःख का कारण बनते हैं। यही फल को भोगने के लिए उसे पुनः पुनः पुनर्जन्म ग्रहण करना पड़ता है। इस प्रकार से कर्मों के फल ही इस पुनर्जन्म में आस्था उत्पन्न करता है।

(8). दुःख का कारण अविद्या :→ भारतीय दर्शन में जन्म से लेकर सारे समस्त दुःखों और कर्मफल के रूप में अगले जन्म में मिलने वाले दुःखों का भी कारण अविद्या को बताया गया है। वैदिक-अवैदिक सभी दर्शन इस विषय में एकमत हैं कि अविद्या ही सभी दुःखों की जड़ है। पर यह अविद्या आई कहाँ से? इसका उत्तर देने में दार्शनिक असमर्थ हैं। वे इसे अनादि कहते हैं।

(9). अविद्या का नाश संभव है :— अविद्या अनादि होते हुए भी अनंत नहीं है। 'विद्या / ज्ञान' के द्वारा इसका अंत हो सकता है। 'सांख्यकारिका' में कहा गया है- "ज्ञानेन चापवर्गो विपर्ययादिष्यते बन्धः" अर्थात बंधन का कारण अविद्या (अज्ञान) है और मुक्ति ज्ञान से मिलती है। इसी प्रकार उपनिषदों का कथन है, "ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः" अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है। इस प्रकार से समस्त दर्शनों ने अलग-अलग तरह से इस अविद्या के नाश की बात करते हैं।

(10) नैतिकता का महत्व :→ प्रत्येक दर्शन मुक्ति की प्राप्ति हेतु व्यावहारिक मार्ग भी बतलाता है। यह मूलतः नैतिक मार्ग है। डा० राधाकृष्णन् के अनुसार दैवीय ज्ञान की प्राप्ति के लिए आचार-शुद्धि पहला कदम है। भारतीय दार्शनिक मोक्ष की प्राप्ति हेतु चित्त की शुद्धि, कर्म, शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप जैसे नैतिक विचारों को महत्वपूर्ण माना है, जिसके लिए पंचमहाव्रत अथवा पंचशील की आवश्यक बताया है। वे हैं— सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य।

(11) धर्म और दर्शन में समन्वय :→ भारतीय दर्शन में धर्म एवं दर्शन दोनों का लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। इसलिए धर्म एवं दर्शन में गहरा संबंध देखते हैं। दर्शन के द्वारा धर्मों को बौद्धिक आधार मिला एवं उसे रूढ़िवादिता से छुटकारा मिल सका। इन्हें एक-दूसरे का पूरक कहना उपयुक्त होता है, क्योंकि दर्शन जहाँ केवल विचारों तक सीमित है, वहाँ धर्म क्रियात्मक रूप से आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त करता है। वस्तुतः धर्म ही दर्शन को सार्थक बनाता है।

(12) प्रमाणशास्त्र एवं तर्कशास्त्र को महत्व :→ भारतीय दर्शन में तत्व-विषयक सैद्धांतिक चर्चा की अपेक्षा उसकी अनुभूति महत्वपूर्ण मानी गई है। इसके साथ ही यहाँ पर समान रूप से प्रमाणशास्त्र एवं तर्क-मीमांसा की भी प्रमुखता रही है। प्रत्येक भारतीय दर्शन की अपनी ज्ञान-मीमांसा रही है और सभी ने सत्य की खोज में प्रमाणों पर गंभीरता से विचार किया है। इससे भारतीय तर्कशास्त्र भी अत्यंत समृद्ध हुआ है। न्याय-दर्शन तो मुख्यतः तर्कशास्त्र ही है। इनका उद्देश्य भी उस ज्ञान की प्राप्ति रहा है, जो मोक्ष की प्राप्ति कराये।

इस प्रकार से उपर्युक्त विवरणों से यह ज्ञात होता है कि भारतीय दर्शन की परंपरा अत्यंत गंभीर और विस्तृत रहा है। यहाँ एक ओर 'जीवन का एक ढंग' या 'जीवन-पद्धति' है, तो दूसरी ओर इसमें तत्व-मीमांसा, प्रमाणशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र आदि विषयों के साथ सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही पक्षों का ध्यान रखकर चिंतन हुआ है। इस प्रकार से भारतीय दर्शन की हर बात समन्वयात्मक है और इसकी विशेषताएँ अनगिनत। इनका वर्णन यहाँ करना संभव नहीं।